खेती री बातां

वर्ष–15 अंक–2 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 फरवरी 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

इज़राइली शिष्टमण्डल की कृषि मंत्री से मुलाकात

इज़राइल के प्रतिनिधियों से अपने निवास पर चर्चा करते हुए कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क।

जयपुर, 28 दिसम्बर। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क से इज़राइल दूतावास के मिनिस्टर डिप्टी चीफ ऑफ मिशन श्री याहिल विलान एवं इन्टरनेशनल कॉरपोरेशन साइन्स एण्ड टेक्नोलोजी के काउन्सलर श्री उरी रूबीन्स्टन ने उनके राजकीय निवास पर मुलाकात की।

इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री बुरड़क ने चर्चा के दौरान इज़राइली शिष्टमण्डल को बताया कि रेगिस्तानी प्रदेश होने के बावजूद यहॉ कृषि के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित हुए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में कृषि अनुसंधान व शोध कार्यकलापों को पूरी प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य के रेगिस्तानी क्षेत्र में खजूर की खेती की विपुल संभावनाएं हैं, इस हेतु इज़राइल में उपलब्ध कृषि तकनीक की यहां हस्तांतरण की महती आवश्यकता है ताकि यहां स्थापित किए जा रहे ''खजूर सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स'' को सुविधा सम्पन्न बनाया जा सके। उन्होंने खारे पानी का उपचार कर कृषि में उपयोग करने की तकनीक भी प्रदेश के लिए जरूरी बताई।

श्री याहिल विलान ने कहा कि राजस्थान में खजूर की खेती को ओर अधिक विकसित करने के लिए पूरे प्रयास किए जायेंगे और कोशिश यह भी रहेगी कि ''खजूर सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स'' पर इज़राइली तकनीक यहां के कृषकों तक ज्यादा से ज्यादा पहुचें। राज्य में कृषि और उद्यानिकी क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य में खजूर के अलावा संतरा व अनार उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए भी अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने इस दिशा में सहयोग के लिए भी आश्वस्त किया।

इस अवसर पर उद्यान व कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण व जन प्रतिनिधिगण भी उपस्थित थे।

कृषि मंत्री के साथ 28 सदस्यीय दल का इज़राइल दौरा

जयपुर, 27 जनवरी। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क के नेतृत्व में 28 सदस्यों के एक दल ने दस दिवसीय इज़राइल अध्ययन भ्रमण के लिए 23 जनवरी को जयपुर से प्रस्थान किया तथा यह दल 3 फरवरी, 2012 को वापस लौटेगा।

यह दल इज़राइल में जल प्रबन्धन एवं कृषि की आधुनिक तकनीक का अवलोकन करेगा। इस दल में कृषि संबद्ध अधिकारियों के अलावा राज्य के विभिन्न जिलों के चौदह प्रगतिशील किसान भी सम्मिलित हैं।

कृषि मंत्री के नेतृत्व में इजराइल जाने वाले सदस्यों में तकनीकी शिक्षा (कृषि) राज्य मंत्री श्री मुरारीलाल मीणा, ग्रामीण विकास, पंचायतीराज एवं कृषि राज्य मंत्री श्री विनोद कुमार, प्रमुख शासन सचिव उद्यान डॉ. दिनेश गोयल,

शेष पृष्ठ 4 पर.....

आमदनी का साधन : कुष्माण्ड कुल की सब्जियॉ

कुष्माण्ड़ कुल की सब्जियॉ कुकुरबिटेसी वंश के अन्तर्गत आती हैं। कुष्माण्ड कुल को कद्दूवर्गीय सब्जियों के नाम से भी जाना जाता है। इन दिनों अन्य सब्जियों की उपलब्धता बहुत कम रहती है तथा सब्जियों की मांग अधिक रहती है । अतः कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती करके किसान अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जलवायु व मृदा :– अच्छे जल निकास वाली हल्की दोमट भूमि तथा गर्म व शुष्क मौसम इनकी खेती के लिए उपयुक्त होता है। प्रकाश व तापमान के घटने–बढ़ने से नर फूल अधिक तथा मादा फूलों की संख्या कम होती है।

प्रमुख किस्में :–

लौकी : पूसा समर प्रोलिफिक लोंग, पूसा समर प्रोलिफिक राउण्ड, पूसा मंजरी (संकर गोल), पूसा नवीन, पूसा मेघदूत (संकर लम्बी), अर्का बहार।

कद्दू (काशीफल) : पूसा विश्वास, पूसा अलंकार, अर्का चन्दन, पूसा हाइब्रिड–1

तरबूज : शुगर बेबी, असाही यामेटो, दुर्गापुरा–मीठा, दुर्गापुरा–केसर, अर्काज्योति (संकर किस्म), मधु (संकर किस्म)।

खरबूजा : दुर्गापुरा मधु, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाईब्रिड, अर्काजीत, हरा मधु, पूसा मधुरस।

चिकनी तुरई : गलगल तुरई (पूसा चिकनी), सलैक्शन–99, कल्याणपुर चिकनी, पूसा सुप्रिया।

धारीदार तुरई : पूसा नसदार, कल्याणपुर धारीदार, अर्का सुमित, अर्का सुजात।

खीरा : बालम खीरा, पॉइनसेट, पूसा संयोग (संकर किस्म), जापानीज लोंग ग्रीन, पूसा अलंकार।

करेला : कोयम्बटूर लोंग, पूसा दो मौसमी, प्रिया, अर्का हरित, पूसा विशेष, महिको करेला, ग्रीन लोंग, जयपुर लोकल।

टिण्डा : बीकानेरी ग्रीन, दिल पसन्द, टिण्डा लुधियाना (एस–48), हिसार सलेक्शन–1, अर्का टिण्डा, जयपुर लोकल रोएंदार।

ककड़ी : लखनऊ अगेती, अर्का शीतल।

पेठा : कोयम्बटूर–1, कोयम्बटूर–2, एस.–1

बीज दर :– लौकी, काशीफल, करेला, तरबूज, तुरई व टिण्डे का 4 से 5 किलो एवं खरबूजे का 1.5 से 2 किलो तथा खीरा एवं ककड़ी का 2 से 2.5 किलो बीज प्रति हैक्टर काम में लेवें।

बुवाई का समय– ग्रीष्मकालीन फसल के लिये तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, तुरई, खीरा, लौकी, कद्दू, करेला तथा टिण्डे की बुवाई फरवरी–मार्च में करना उचित रहता है।

बीज उपचार :–

बीमारियों की रोकथाम के लिये बीज को कार्बेण्डेजिम 2 ग्राम दवा प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बोयें।

शेष पृष्ठ 4 पर.....

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in bl vad esa—— www.krishi.rajasthan.gov.in

- इस माह के कृषि कार्य
- चतुर फुलवा

पृष्ठ 2

- जायद मूंग : फायदे का सौदा
- गेहूँ में रोली रोग
- समय पर करें मोयला नियंत्रण

पृष्ठ 3

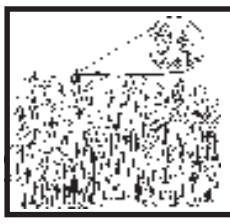

- जायद में ज्वार चारा उगाएं : दुग्ध उत्पादन बढाएं

पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

- गेहूँ की फसल में गांठ बनते समय तथा बालियां आने के समय (बुवाई के 70 दिन बाद) व जौ में दूधिया अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें।
- जायद मूंगफली की जी.जी.–2, आर.जी.–141, टी.ए.जी.–24, टी.ए.जी.–37 ए, किस्मों की 100–120 किलोग्राम गुली प्रति हैक्टर बोऐं।

बागवानी

- जहां पर सिंचाई की सुविधा हो वहां नींबू, अमरूद, अनार, बेर, आंवला आदि के पौधे फरवरी माह में लगाये जा सकते हैं।
- नींबू के पौधों के मूल–वृन्त तैयार करने हेतु नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें।
- आम, अंगूर, अमरूद में एन्थ्रेक्नोज़ के नियंत्रण के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम या मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम, अंगूर व बेर में छाछ्या रोग के नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 2 ग्राम या केराथियॉन 1 मिलीलीटर या केलेक्सिन 1 मिलीलीटर दवा का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नींबू में सिट्रस केंकर के नियंत्रण के लिए बोर्डो मिक्स्चर

(4 :4 : 50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 250 मिलीग्राम व बाविस्टिन एक ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पपीते में तना गलन रोग के बचाव के लिए पानी का निकास सही करें। कैप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सब्जियॉ

- बैंगन, टमाटर, भिण्डी में मकड़ी, थ्रिप्स, सफेद व हरा तेला के नियंत्रण के लिये डायमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन, टमाटर, कुष्माण्ड कुल एवं पत्तियों वाली सब्जियों में झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब या टोप्सिन–एम या जाइनेब 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- ग्रीष्मकालीन भिण्डी की बुवाई करें। गर्मी की फसल हेतु बीज दर 20 किलो प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें। इसमें कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर एवं पौध से पौध की दूरी 12–15 सेन्टीमीटर रखें। भिंडी की पूसा सावनी, पूसा मखमली, परभनीक्रान्ति, अर्का अभय व अर्का अनामिका किस्में बुवाई के लिए ली जा सकती हैं।
- प्याज की रोपाई के 30–45 दिन बाद फसल में 50 किलो नत्रजन (110 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से देवें तथा सिंचाई करें।
- पिछेती बोई गई आलू की फसल की देखभाल करें। बुवाई के 30–35 दिन बाद 125–150 किलो यूरिया प्रति हैक्टर की दर से मिट्टी चढ़ाते समय देवें।

मसाले

- सौंफ, धनियॉ व जीरे की फसल पकने पर काट लें तथा साफ जगह पर अच्छी तरह सुखा लेवें।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

- पशुओं में खुरपका–मुँहपका तथा भेड़ों व बकरियों में फड़किया व माता रोग का टीका लगवाऐं।
- चारे में बदलाव धीरे–धीरे करें।
- पशुओं को निर्धारित मात्रा में दाना तथा मिनरल मिक्स्चर अवश्य दें।

जायद मूंग : फायदे का सौदा

• जायद मूंग की खेती पेटा–कास्त वाले क्षेत्रों, जल ग्रहण वाले क्षेत्रों एवं बलुई दोमट, काली तथा पीली मिट्टी वाले क्षेत्रों में जिनकी जल धारण क्षमता अच्छी हो, करना लाभप्रद रहता है।

• मूंग की फसल 60 से 65 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च के मध्य की जानी चाहिए।

• मूंग की अधिक उपज देने वाली किस्में– पूसा बैशाखी, आर.एम.जी. –62, आर.एम.जी.–268, एस.एम.एल. –668, एस–8, एस–9, के–851, आर. एम.जी.–344, आर.एम.जी.–492 हैं।

• मूंग की बुवाई हेतु भूमि को मिट्टी पलटने वाले हल से 1–2 बार जुताई कर खेत में पाटा लगाकर समतल कर लें।

• मूंग के बीज को बीज जनित बीमारियों (जैसे उखटा) से बचाने के लिए 3 ग्राम कैप्टान या 2 ग्राम कार्बेन्डिजम या इमिडाक्लोप्रिड 5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को सर्वप्रथम राइजोबियम कल्चर (3 पैकिट प्रति हैक्टर) फिर पी.एस.बी. कल्चर (3 पैकिट प्रति हैक्टर) अन्त में जैविक फफूंदनाशी ट्राइकोडर्मा 6–8 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से या फफूंदनाशी रसायनों से विभागीय सिफारिश अनुसार उपचारित कर बुवाई करें।

• एक हैक्टर क्षेत्रफल के लिए 15–20 किलो बीज पर्याप्त होता है। कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखें।

• मूंग की फसल में उर्वरक प्रबंधन भी आवश्यक है। बुवाई से पूर्व 250 किला जिप्सम खेत में डालें। उर्वरकों में 90 किलो डी.ए.पी. एवं 10 किलो यूरिया अथवा 250 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट व 45 किलो यूरिया बुवाई के समय ऊरकर देवें।

• मूंग की फसल में बुवाई के 25 से 30 दिन बाद निराई–गुड़ाई करें। इससे खरपतवार की रोकथाम के साथ नमी संरक्षण भी होता है।

• मूंग की फसल में मोयला, हरा तेला व फलीछेदक कीट का प्रकोप हो तो अजाडिरेक्टिन 3 मिली लीटर दवा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 2 मिली लीटर दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

• मूंग में चित्ती जीवाणु रोग में छोटे गहरे रंग के धब्बे पत्तों, फलियों व तनें पर दिखाई देते हैं। इसकी रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 3 ग्राम तथा 30 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का प्रति टंकी (15 लीटर) की दर से छिड़काव करें।

• मूंग में पीतशीरा मोजैक रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ देवें एवं डायमिथोएट 30 ई.सी. 2 मिली लीटर दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

• छाछ्या रोग की रोकथाम के लिए केराथियान एल.सी. 1 मिली लीटर दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

• मूंग में पीलिया रोग होने पर व्यापारिक सल्फ्यूरिक अम्ल 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी अथवा फैरस सल्फेट 5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

• मूंग की फसल पकने पर फलियों को काट लेवें। फसल सूखने पर गहाई कर दाना निकाल लेवें।

• इस प्रकार उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर 15–20 क्विंटल प्रति हैक्टर मूंग की उपज प्राप्त की जा सकती है।

समय पर करें मोयला नियंत्रण

मोयला या चेंपा या एफिड सरसों का एक प्रमुख हानिकारक कीट है। शिशु तथा वयस्क दोनों पौधों की पत्तियों, टहनियों, फूलों तथा फलियों पर चिपक कर उनका रस चूसते हैं। प्रकोप वाले पौधों पर फलियां कम लगती हैं, दाने छोटे रह जाते हैं व फसल को भारी नुकसान होता है।

★ फसल में 50 से 60 मोयला प्रति सेन्टीमीटर पौधे के केन्द्रीय शाखा या 30 प्रतिशत पौधे ग्रसित होने पर नियंत्रण हेतु छिड़काव करें।

★ मोयला की रोकथाम के लिए मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें।

★ पानी की सुविधा वाले क्षेत्रों में थायोमिथोक्साम 25 डब्ल्यू.जी. या एसिटामप्रिड 20 प्रतिशत 100 ग्राम दवा प्रति हैक्टर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा मैलाथियॉन 50 ई.सी. सवा लीटर या डायमिथोएट 30 ई.सी. 875 मिलीलीटर या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या फार्मोथियॉन 25 ई.सी. एक लीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किलो प्रति हैक्टर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

★ मोयला के समन्वित कीट नियंत्रण के लिए कीट के आर्थिक हानि स्तर पर पाए जाने पर बायोएजेंट वर्टीसिलियम लोकेनाई 1.0 किलो प्रति हैक्टर एवं सात दिन के अन्तराल पर मिथाइल डिमेटोन (25 ई.सी.) या डायमिथोएट (30 ई.सी.) 875 मिली लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

★ फसल में कीट आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाए जाने पर 2 प्रतिशत नीम के तेल को 0.1 प्रतिशत तरल साबुन के घोल (20 मिली लीटर नीम का तेल + 1 मिली लीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें।

गेहूँ में रोली रोग नियंत्रण

गेहूँ में काली, भूरी व पीली–तीन प्रकार की रोली का प्रकोप होता है। राजस्थान एवं देश के सभी प्रमुख गेहूँ उत्पादक प्रदेशों में भूरी एवं पीली रोली रोग से अधिक क्षति होती है। उन्नत प्रतिरोधी किस्मों के विकास एवं प्रसार के साथ ही गेहूँ की ये तीनों विनाशकारी रोली रोग अब नियंत्रण में हैं। गेहूँ की कुछ स्थानीय देसी किस्मों में ये रोग अभी भी पाया जाता है।

• रोली रोग की रोकथाम के लिए गेहूँ की प्रतिरोधी किस्मों– राज 3077, राज 3777, राज 3765, राज 1482, राज 4083 व राज 4037 आदि का प्रयोग करें।

• सुरक्षात्मक उपाय के रूप में गंधक चूर्ण 24 किलो प्रति हैक्टर का भुरकाव 15 दिन के अन्तराल पर 2–3 बार सुबह या शाम के समय करें। बेलीटोन 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी या प्रोपाकोनेजॉल (25 ई.सी.) 1 मिली लीटर दवा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।

• मैन्कोजेब 3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करना भी उपयुक्त रहता है।

• नत्रजनीय उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से भी रोली रोग का प्रकोप बढ़ता है।

• संतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करें। एन.पी.के. का अनुपात 4:2:1 रखें।

फार्म–4
(नियम 8 देखिये)
खेती री बातां

1.प्रकाशन स्थान	पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर
2.प्रकाशन अवधि	मासिक
3.मुद्रक का नाम	श्री भवानी सिंह देथा
क्या भारत नागरिक है	हां
पता	आयुक्त कृषि, कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर
4.प्रकाशक का नाम	श्री भवानी सिंह देथा
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	आयुक्त कृषि,कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर
5,सम्पादक का नाम	श्री हीरेन्द्र शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	उप निदेशक,कृषि (सूचना) कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जयपुर।
6.उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के साझेदार या हिस्सेदार हों ।	कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर।

मैं भवानी सिंह देथा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

भवानी सिंह देथा
प्रकाशक

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां "

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषित–

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

जायद में ज्वार चारा उगाएं : दुग्ध उत्पादन बढ़ाएं

सामान्यतयाः रबी फसलों की कटाई के बाद हरे चारे की कमी हो जाती है। दुधारू पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए हरे चारे की नियमित उपलब्धता आवश्यक है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा वृहत स्तर पर चारा उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है। हरे चारे की उपलब्धता बढ़ने से दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी और किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी।

• बुवाई के 25–30 दिन पूर्व 15–20 गाड़ी अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टर मिलायें। मिट्टी परीक्षण सिफारिश अनुसार उर्वरक देवें। ज्वार की फसल में 90 किलो डी.ए.पी.+50 किलो यूरिया अथवा 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट+90 किलो यूरिया प्रति हैक्टर बुवाई पूर्व ऊर कर देवें। खड़ी फसल में 65 किलो यूरिया प्रत्येक कटाई के बाद देवें ताकि फुटान अच्छी हो सके।

• प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम से उपचारित कर बुवाई करें। इसके बाद एक हैक्टर के बीज को 3 पैकेट एजेटोबेक्टर + 3 पैकेट पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित कर तुरन्त बुवाई कर देनी चाहिए। एक हैक्टर में 40 किलो बीज की बुवाई करें।

• चारे की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए ज्वार बीज के साथ 10 से 20 किलो लोबिया का बीज प्रति हैक्टर मिला कर बोयें।

• ज्वार की बुवाई मध्य फरवरी से मध्य मार्च तक करना श्रेष्ठ रहता है। बीज की बुवाई 25 से 30 सेन्टीमीटर दूरी पर पंक्तियों में 5 से 7 सेन्टीमीटर की गहराई पर सीड ड्रिल या पोरा द्वारा करनी चाहिए।

• फसल में 10–12 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

• उन्नत किस्में:–

एक कटाई वाली किस्में–

राजस्थान चरी–1, राजस्थान चरी–2, राजस्थान चरी–3, पूसा चरी–6

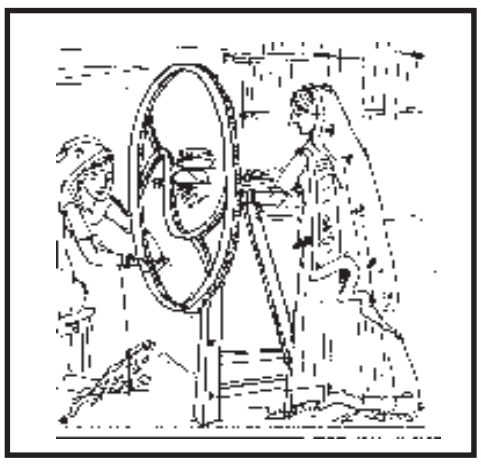

बहुकटाई वाली किस्में–

एस.एस.जी 59–3, एम.पी.चरी, पी.सी.9, पी.सी. 23 ।

• एक कटाई वाली किस्मों की कटाई 50 प्रतिशत फूल आने पर ही (60–70 दिन पर) करें। बहु कटाई वाली किस्मों की पहली कटाई फूल आने पर (60–70 दिन बाद) एवं अगली कटाई प्रत्येक 50–60 दिन बाद करें।

• ज्वार चरी की एक कटाई वाली किस्मों से 350–400 क्विंटल प्रति हैक्टर हरा चारा प्राप्त होता है। बहु कटाई वाली किस्मों से 900–950 क्विंटल प्रति हैक्टर हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं।

• ज्वार के हरे चारे में प्रूसिक अम्ल नामक एक विषैला पदार्थ पाया जाता है। पानी की कमी की स्थिति में 50 दिन तक की फसल में इस जहरीले अम्ल की मात्रा ज्यादा होती है।

अतः ज्वार की छोटी फसल को चारे के रूप में पशुओं को नहीं खिलाएं। फूल आने से पूर्व कटाई नहीं करें तथा सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में विशेष सावधानी रखें।

बून्द बून्द जल की कदर, करलो मेरे बीर।
वरना कल जल के बिना भोगोगे सब पीर।।

पृष्ठ 1 का शेष.....कुष्माण्ड कुल की.....

बुवाई :– अगेती फसल लेने हेतु फरवरी मार्च में बीजों को सीधे खेत में न बोकर प्लास्टिक की थैलियों में बोया जा सकता है। थैलियों में 1/3 भाग चिकनी मिट्टी, 1/3 भाग बालू व 1/3 भाग मींगनी या गोबर की खाद मिलाकर एक थैली में दो बीज बोयें।

उपयुक्त तापमान होने पर पौधों को स्थानांतरित कर खेत में लगाऐं। सीधे खेत में बोने के लिए बीज को बुवाई से पूर्व 24 घंटे पानी में भिगोने के बाद टाट में बांध कर 24 घंटे रखें।

लौकी की बुवाई के समय कतारों एवं पौधों के बीच 2.5 से 3.0× 0.75 मीटर, कद्दू की 3.0 से 4.0×1.25 मीटर, करेला की 1.25× 0.50 मीटर, तरबूज की 2.5× 1.00 मीटर, खरबूजे की 2. 0× 0.60 मीटर, ककड़ी के लिये 1.5× 0.60 मीटर की दूरी रखें। तुरई, खीरा एवं टिण्डा की फरवरी–मार्च में 1.5× 0. 50 से 0.75 मीटर की दूरी रखें।

यदि कुष्माण्ड कुल की सब्जियों की बुवाई नालियों में करें तो एक स्थान पर दो–तीन बीज बोऐं तथा अंकुरण के कुछ दिन बाद 1–2 पौधों को रखकर शेष को हटा देवें।

खाद व उर्वरकः–

200–250 क्विंटल गोबर की खाद, 100 किलो डी.ए.पी.+20 किलो यूरिया एवं 80 किलो म्यूरेटऑफ पोटाश बुवाई के समय भूमि में मिलाकर देवें। 50 किलो यूरिया बुवाई के 25–30 दिन बाद व 50 किलो यूरिया फूल आने के समय देना चाहिये।

कीट व्याधि नियंत्रण :–

लाल भृंग– कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 5 किलो प्रति बीघा भुरकें या आधा ग्राम ऐसीफेट 75 एस. पी. घुलनशील चूर्ण का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें एवं 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव दोहरावें।

फल मक्खी– काणें फलों को तोड़कर नष्ट करें। मैलाथियान 50 ई.सी. या डाइमिथोऐट 30 ई.सी. एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

बरूथी– इथियॉन 50 ई.सी. 0.6 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर जून के दूसरे सप्ताह में छिड़काव करें।

तलासिता, झुलसा एवं एन्थ्रेक्नोज़– मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

छाछ्या – केराथियॉन एल.सी. 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

पृष्ठ 1 का शेष..... कृषि मंत्री के साथ.....

प्रमुख शासन सचिव कृषि श्री देवेन्द्र भूषण गुप्ता, आयुक्त कृषि श्री भवानी सिंह देथा, निदेशक उद्यान श्री जगरूप सिंह यादव, अपर निदेशक कृषि (विस्तार) श्री मदन लाल सालोदिया, संयुक्त निदेशक कृषि (जल उपयोग) श्री एल.एन.कुमावत, संयुक्त निदेशक कृषि (विस्तार) श्रीगंगानगर श्री विजेन्द्र सिंह नैन, उप निदेशक कृषि (प्रशासन) श्री गोपाल लाल, उप निदेशक कृषि (सूचना) श्री हीरेन्द्र शर्मा, सहायक निदेशक (उद्यान) सीकर श्री राकेश कुमार अटल, सहायक निदेशक कृषि (विस्तार) बीकानेर श्री जगदीश चन्द्र पूनियां, निजी सहायक (कृषि मंत्री) श्री कमलेश जैन सहित चौदह प्रगतिशील कृषक सर्वश्री मोटाराम (सीकर), प्रभूराम (नागौर), कृष्ण सिंह (अलवर), विजय सिंह (झुंझनू) जयसिंह (चूरू), सहीराम (बीकानेर), भंवरलाल (नागौर), सुधीर परिहार (जोधपुर) सतीश सिंह राठौड़ (जैसलमेर), अब्दुल कयूम (नागौर), छोगालाल (बाड़मेर), गुरपाससिंह (हनुमानगढ़), खेमाराम (जयपुर) एवं प्रणवीर सिंह (पाली) सम्मिलित हैं।

परख

जनवरी, 2012 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले कृषकों में से दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री जयपाल ईनाणियां**
   पुत्र श्री घेवर राम ईनाणियां
   ईनाणिया एण्ड कम्पनी,
   नागौर रोड़,
   मारवाड़, मूण्ड़वा,
   जिला व तह0– नागौर–341026
2. **श्री जितेन्द्र चौधरी**
   पुत्र श्री दीपाराम सीरवी
   ग्राम – बूसी
   जिला व तहसील– पाली–306503

(विजेताओं को पुरस्कार स्वरुप कृषि साहित्य डाक द्वारा भेजा जा रहा है।)

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 मूंग में पीतशीरा मोजैक रोग के नियंत्रण का उपाय बतायें ?

प्र.2 बाजरा चरी की किस्मों के नाम बताएं ?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के जवाब इस पते पर उपनिदेशक कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक	– श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक	– कु. पूनम चौधरी
परामर्श	– श्री के. आर. यादव
डिजाइन	– श्री आर. मैसी